ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 34-35**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी के कथा साहित्य में सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में नारी जाति के शोषण का यथार्थपरक चित्रण

अनिता खण्डेवाल, 2. डॉ0 आनंद राय

शोध अध्येत्री, 2. शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) भारत

Received-12.07.2025, Revised-19.07.2025, Accepted-25.07.2025 **E-mail : anitakhandewal86@gmail.com**

सारांशः ***यशपाल और भीष्म साहनी की कहानियाँ समकालीन हिंदी साहित्य में उन आवाजों को स्थान देती हैं, जो लंबे समय तक समाज और साहित्य दोनों में दबा दी गई थीं। इन कहानियों में नारी केवल एक पात्र नहीं, बल्कि एक जीवंत संवेदना बनकर उभरती है, जो अपने अस्तित्व, अधिकार और स्वाभिमान के लिए संघर्षरत है। चाहे यशपाल की क्रांतिकारी दृष्टि हो या भीष्म साहनी की मानवीय करुणा कृ दोनों ने महिला पात्रों के माध्यम से सामाजिक विडंबनाओं, आर्थिक असमानताओं और लैंगिक भेदभाव को उजागर किया है। इन रचनाओं में नारी की व्यथा सिर्फ व्यक्तिगत न होकर सामूहिक अनुभव का रूप लेती है। उनकी कहानियाँ दिखाती हैं कि किस प्रकार आज भी शिक्षित समाज में बेटी का जन्म उपेक्षा का कारण बनता है और किस तरह एक आम स्त्री को दो वक्त की रोटी, सम्मान और सुरक्षा के लिए आजीवन संघर्ष करना पड़ता है। इन कहानियों की विशेषता यह है कि ये न काल्पनिक हैं और न ही अतिनाटकीय – ये हमारे आस–पास के समाज की असली तस्वीर हैं, जिनमें संबंधों की पेचीदगियाँ, इंसानी लालसा और व्यवस्था की निष्ठुरता सब कुछ स्पष्ट रूप से सामने आता है।***

इस प्रकार, यशपाल और भीष्म साहनी का कथा साहित्य न केवल साहित्यिक स्तर पर महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक चेतना को जगाने का भी कार्य करता है। इनकी कहानियाँ नारी जीवन के माध्यम से पूरे समाज को आईना दिखाती हैं और एक नए, अधिक समानतावादी समाज की नींव रखने की दिशा में अग्रसर हैं।

कुंजीभूत शब्द– **कथा साहित्य, सामाजिक एवं आर्थिक समस्या, नारी जाति के शोषण, यथार्थपरक चित्रण, सामाजिक चेतना ।**

प्रस्तावना – हिन्दी कथा साहित्य में नारी जीवन की स्थिति, संघर्ष और शोषण का चित्रण एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय रहा है। विशेषतः 20वीं शताब्दी के सामाजिक यथार्थवादी लेखकों ने नारी की समस्याओं को सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में गहराई से उजागर किया। इस संदर्भ में यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी जैसे प्रख्यात कथाकारों का योगदान उल्लेखनीय है। दोनों लेखकों ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी के जीवन में व्याप्त पीड़ा, अन्याय, असमानता और शोषण को सिर्फ दर्शाया ही नहीं, बल्कि उसके मूल कारणों की भी पड़ताल की है। चाहे वह सामाजिक रूढ़ियाँ हों, पितृसत्ता की जकड़न हो या आर्थिक असमानताकृइन सबने मिलकर नारी को एक दोयम दर्जे की स्थिति में पहुँचाया है। यशपाल अपने साहित्य में नारी को विद्रोही स्वर देते हैं, जबकि भीष्म साहनी अधिक संवेदनशील और यथार्थपरक दृष्टिकोण से उसकी त्रासदी को सामने रखते हैं।

यशपाल शर्मा जी के कथा – साहित्य में चित्रित नारी पात्रों की समस्याएँ केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समूची नारी जाति की साझा पीड़ा का प्रतिनिधित्व करती हैं। उन्होंने विशेष रूप से यौन समस्या को केंद्र में रखकर स्त्री की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया है। यशपाल की कहानियाँ यह दिखाती हैं कि स्त्री केवल शरीर नहीं, बल्कि चेतना है कृ और इसी चेतना को बार–बार कुचला जाता है। साथ ही उन्होंने आर्थिक व सामाजिक पिछड़ेपन, धार्मिक अंधविश्वासों, और रूढ़िगत मान्यताओं से त्रस्त नारी जीवन को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया। यशपाल का मार्क्सवादी दृष्टिकोण उनके लेखन में स्पष्ट रूप से झलकता है, जहाँ वे स्त्री के शोषण को केवल लैंगिक नहीं, बल्कि आर्थिक–सामाजिक ढांचे से जुड़ा मानते हैं। उनकी कहानियाँ जैसे – "ज्ञानदान", "पराया सुख", "जबरदस्ती", "अपनी चीज",निर्वासिता और ,होली नहीं खेलता", में स्त्री के शरीर, उसकी इच्छा, और समाज द्वारा आरोपित नैतिकता के बीच के संघर्ष को उजागर करती हैं। यशपाल ने सामाजिक विषमताओं का मूल कारण आर्थिक असमानता को माना है, जो कि उनकी विचारधारा में स्पष्ट रूप से मार्क्सवादी प्रभाव का संकेत देता है। यशपाल फ्रेडरिक एंगेल्स के इस कथन को स्वीकारते हैं कि – "किसी भी युग के सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक क्रांतियों का कारण उस समय के दार्शनिक विचारों में नहीं, बल्कि उस युग की आर्थिक परिस्थितियों में निहित होता है।" उनके द्वारा रचित रचनाओं में सेक्स और सत्ता के बीच का संबंध, और आर्थिक पराधीनता के कारण जन्म लेने वाली यौन शोषण की प्रवृत्ति प्रमुखता से उभरती है। यशपाल को पूंजीवादी नैतिकता और सामाजिक आडंबर कतई स्वीकार्य नहीं थे, और उन्होंने अपने लेखन में व्यभिचार, अनाचार, छल–कपट और ईर्ष्या को मानवीय दुर्बलताओं के सामाजिक कारणों से जोड़ा। यशपाल ने कहानी "पराया सुख" की नायिका उर्मिला उस नारी वर्ग की प्रतिनिधि है, जो आर्थिक विवशताओं के चलते धीरे–धीरे पूंजीवादी यौन–शोषण के जाल में फँस जाती है। कहानी में सेठी मिस्टर मदन, जो कि मिसेज मदन की रूप–सौंदर्य से आकर्षित होता है, नारी देह को स्पर्श किए बिना ही उस पर स्वामित्व का दावा कर लेता है। यह आधुनिक पूंजीवादी मानसिकता का नग्न रूप है। कोकला डकैत" की नायिका कोकला एक पहाड़ी स्त्री है जो जंगल से घास और लकड़ी बटोरकर नैनीताल में बेचती है। गरीबी और असहायता उसे इस कदर विवश कर देती है कि वह सड़क पर एक अठन्नी के लिए डकैती करती है और परिणामस्वरूप उसे चार वर्षों की कठोर सजा मिलती है। लेकिन यशपाल इस कहानी में गहरे प्रश्न उठाते हैं – "अठन्नी के लिए सड़क पर डकैती कानून की नजर में जुर्म है, लेकिन बार–बार जो उससे छीना गया, वह किस न्याय की श्रेणी में आता है?" यह वाक्य यशपाल के सामाजिक न्याय के सरोकार और दोहरे कानूनों की आलोचना का प्रमाण है यशपाल शर्मा इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि स्त्री की देह का सौदा केवल उसकी इच्छा से नहीं होता, बल्कि यह सौदा समाज की उपेक्षा, पितृसत्ता, और गरीबी की मिलीभगत से होता है। "दुखी दुखी" एक गूंगी चीख है, जो कहती है – "जिसे तुम 'पाप' कहते हो, वह मेरे लिए रोटी है।" यशपाल के कथा–साहित्य में समाज की नग्न सच्चाइयाँ, मानवीय व्यवहार की जटिलताएँ और विशेष रूप से नारी की विवशताओं का सजीव और निर्भीक चित्रण मिलता है। नारी की यौन–मन स्थितियों, सामाजिक प्रतिष्ठा, और पितृसत्तात्मक मूल्यों के प्रभाव को उजागर करने वाली यशपाल की कहानियाँ – जैसे 'प्रतिष्ठा का बोझ', 'आतिथ्य', 'दास धर्म', 'समाधि की धूल', 'रिजक', 'उत्तमी की माँ', 'दूसरी नाक', 'जहाँ हसद नहीं है', 'ज्ञानदान', 'निर्वासिता', 'ओ भैरवी', 'प्रायश्चित', 'शिकायत', 'आबरू', 'छलिया', 'नारी', 'तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूँ', 'जिम्मेवारी', 'अस्सी बड्ढा सौ' न केवल स्त्री के शोषण को उद्घाटित करती हैं, बल्कि

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

यह भी दर्शाती हैं कि वह एक चेतनशील प्राणी है, जो परिस्थितियों से जूझते हुए अपने अस्तित्व की तलाश में संलग्न है। यशपाल के कथा साहित्य में नारी शोषण के विरुद्ध स्पष्ट और सशक्त स्वर देखने को मिलता है। उन्होंने नारी की दयनीय स्थिति का मूल कारण उसकी आर्थिक पराधीनता को माना है। आर्थिक रूप से निर्भर नारी पुरुष पर आश्रित रहती है, जिससे समाज उसे केवल सेवा और भोग की वस्तु मानने लगता है। पुरुष उसे अपनी संपत्ति समझकर अमानवीय व्यवहार करता है। कठिन परिश्रम के बावजूद नारी को सम्मान नहीं, बल्कि तिरस्कार मिलता है। सामाजिक मर्यादा, भय और असहायता के कारण वह अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस नहीं कर पाती। यशपाल ने अपने साहित्य में इस पुरुष प्रधान व्यवस्था की कड़ी आलोचना करते हुए नारी को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने की आवश्यकता पर बल दिया है। उन्होंने नारी को आत्मनिर्भर, जागरूक और संघर्षशील रूप में प्रस्तुत कर स्वतंत्र अस्तित्व की चेतना को साहित्य में स्थान दिया है। यशपाल की एक महत्वपूर्ण खासियत यह है कि उन्होंने हिंदी कथा–साहित्य में मध्य वर्ग को मुख्य केंद्र बनाया। प्रेमचंद से अलग, उन्होंने इस वर्ग की जमीनी हकीकत को बड़े प्रभावशाली ढंग से पेश किया। बाहरी तौर पर तो यह वर्ग सम्मानित और सम्पन्न दिखता है, लेकिन अंदर से वह पीड़ा, आर्थिक तंगी और जीवन–मूल्यों के संघर्षों से भरा होता है। चूंकि यशपाल स्वयं इसी वर्ग से थे, इसलिए उनकी कहानियों में इस वर्ग का चित्रण बेहद स्वाभाविक और सजीव है। उनके कथानक मध्य वर्ग के संघर्षों और उसकी मानसिक उलझनों को गहराई से उजागर करते हैं, जो हिंदी साहित्य में एक नया और महत्वपूर्ण आयाम है।

हमारे दूसरे साहित्यकार भीष्म साहनी भी हिंदी साहित्य के उन विशिष्ट रचनाकारों में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपने बहुमुखी व्यक्तित्व और यथार्थवादी दृष्टिकोण से साहित्य को नई दिशा दी। उनके लेखन में केवल कल्पना नहीं, बल्कि युगीन समाज की धड़कनें, उसकी सच्चाइयाँ और संघर्षशील जीवन की झलक मिलती है। वे मानवता के पक्षधर लेखक हैं, जिनके साहित्य में मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय और संवेदना की स्पष्ट उपस्थिति देखी जा सकती है। उनकी रचनाएँ अनुभूति की प्रामाणिकता और विचारधारा की स्पष्टता से परिपूर्ण हैं। चाहे वह 'तमस' जैसा ऐतिहासिक उपन्यास हो या 'भटकती राख', 'पटरियां', और 'डायन' जैसे कहानी–संग्रह कृ हर रचना में उनके गहरे सामाजिक सरोकार स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। भीष्म साहनी केवल साहित्यकार नहीं, बल्कि समाज के सजग दृष्टा, संवेदनशील कलाकार और सच्चे मानवीय मूल्यों के प्रतीक हैं। उनके व्यक्तित्व में कलात्मकता, विचारशीलता और करुणा की त्रिवेणी प्रवाहित होती है, जो उन्हें हिंदी साहित्य के महानतम रचनाकारों की श्रेणी में स्थापित करती है। उन्होंने भीं आर्थिक असमानता नारी की प्रमुख समस्याओं में से एक है। समाज में नारी को लंबे समय से अबला और आश्रित माना गया है, और जब वह आर्थिक रूप से कमजोर होती है, तो उसकी स्थिति और भी दयनीय हो जाती है। गरीबी के कारण नारी को कभी–कभी ऐसे कठोर फैसले लेने पड़ते हैं, जो उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाते हैं। कई साहित्यिक रचनाओं में यह आर्थिक विषमता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए, 'गंगो का जाया' कहानी में गर्भवती गंगो और उसका पति घीसू बेरोजगारी और भूख से त्रस्त हैं, जिससे मजबूर होकर वे अपने छोटे बेटे को बूट पॉलिश करने के लिए भेजते हैं। इसी प्रकार, 'घर–बेघर' की नायिका गरीबी के कारण वर्षों से सरकारी कोठरी पर अवैध कब्जा जमाए रखती है और जीवन जीने के लिए चोरी तक करने को मजबूर होती है। 'निशाचर' की केसरो ठिठुरती ठंड में कागज बीनने का काम करती है, तॉकि अपने और परिवार के पेट की आग बुझा सके। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि आर्थिक विवशता नारी को किस हद तक झुका सकती है। 'अभी तो मैं जवान हूँ' ऐसी ही एक स्त्री की कहानी है, जो बेबसी में अपना तन बेचने को विवश है, लेकिन उसे वह शर्म या दुर्बलता नहीं, बल्कि जीवन के लिए उठाया गया साहसी कदम मानती है। साहनी यह दिखाते हैं कि जीने की चाह इंसान को सबसे कठिन रास्तों पर भी चलने को मजबूर कर देती है। नारी अब टूटती नहीं, वह हालातों से जूझती है ऐसे साहित्यिक चित्रण समाज को इस गंभीर समस्या की ओर जागरूक करने का कार्य करते हैं।

निष्कर्ष – भारतीय समाज में नारी को सदियों से अनेक प्रकार की बाधाओं और समस्याओं से गुजरना पड़ा है। कभी अशिक्षा, कभी सामाजिक बंधन, तो कभी मानसिक उत्पीड़नकृइन सबने मिलकर उसकी स्वतंत्रता और आत्मसम्मान को बाधित किया है। यद्यपि समाज सुधारकों और नेताओं ने समय–समय पर इन समस्याओं को हल करने के प्रयास किए हैं, फिर भी नारी की स्थिति आज भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं कही जा सकती। नारी की पीड़ा कोई नई बात नहीं है। यह उतनी ही पुरानी है जितनी खुद सभ्यता, लेकिन इस दर्द की शक्ल हर युग में बदलती रही है। आज की नारी ने बहुत कुछ हासिल किया है – वह अंतरिक्ष में जा रही है, कारोबार चला रही है, कानून बना रही है – लेकिन उसकी असली लड़ाई अब भी बाकी है। स्वतंत्रता के बाद समाज बदला, कानून बदले, सोच भी कुछ बदली। पर आम और साधारण नारी के लिए जिंदगी अब भी संघर्ष का दूसरा नाम है। वह आज भी दो वक्त की रोटी, इज्जत और पहचान के लिए जूझ रही है। उच्च वर्ग की नारी भले ही बाहर से चमकती हो, पर उसके जीवन की पीड़ा अलग है – वह अकेलेपन, भावनात्मक खालीपन और सामाजिक अपेक्षाओं की शिकार है। आज भी कई परिवारों में बेटी का जन्म दुःख का कारण बनता है। गर्भ में ही उसके अस्तित्व को खत्म कर देना जैसे अब एक "विकसित सोच" का हिस्सा बन चुका है। विज्ञान ने जहाँ प्रगति की, वहीं उसने नारी को मिटा देने के नए रास्ते भी दिए। फिर भी, कुछ बदलाव दिखाई देते हैं। नारी अब खुद से सवाल पूछती है। वह समझने लगी है कि प्रेम, विवाह, सेक्स – ये सब सिर्फ सामाजिक बंधन नहीं, बल्कि उसकी पसंद और सम्मान का हिस्सा भी हैं।

लेकिन पुरुषात्मक समाज आज भी भ्रमित है। एक ओर वह नारी की स्वतंत्रता की बात करता है, दूसरी ओर उसी को शक की नजर से देखता है। उसके कपड़ों से लेकर उसकी हँसी तक पर सवाल उठाता है।

इस संघर्षपूर्ण स्थिति को कई साहित्यकारों ने गहराई से समझा और उसे अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया। यशपाल जैसे लेखक जहाँ नारी को केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि चेतना और विद्रोह की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं, वहीं भीष्म साहनी ने नारी के भीतर के अकेलेपन, असुरक्षा और दर्द को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। इनकी रचनाओं ने नारी की वास्तविक समस्याओं को पाठकों के सामने लाकर समाज में सोच और दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास किया है। इस प्रकार, साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बन गया है।

*****